सबला

गाय और बैल

एक बार एक सींगोंवाला बैल एक बिना सींग वाली गाय को ब्याह लाया। सोचा इससे कोई खतरा नहीं। जैसा मैं चाहूंगा वैसा ही होगा। वह जब तब अपने सींग दिखाकर उसे डराता-धमकाता रहता। पर उससे एक भूल हो गई। दरअसल वह बिना सींगो वाली गाय नहीं थी। एक बछिया थी। बेचारी बछिया हर वक्त सहमी रहती। पर मन ही मन सोचती काश उसके सींग होते तो वह बैल को दिखा देती। उसे यह मालूम नहीं था कि उसके भी सींग निकल सकते थे। उसने खुद को कभी गौर से देखा ही नहीं था।

एक दिन उसने अपनी परछांई को पानी में देख लिया तो हैरानी के साथ-साथ खुशी से उछल पड़ी। उसके भी दो छोटे-छोटे सींग निकल रहे थे। अब तो वह उनके बड़े होने का इंतज़ार करने लगी। अब तक तो वह लाचार खूंटे से बंधी थी। खूंटा तोड़कर भागने की न तो उसमें हिम्मत थी। न ही वह अपने बछड़ों को छोड़ना चाहती थी।

जैसे-जैसे सींग बड़े होते गये उसकी हिम्मत बढ़ती गई। अब उसने अपनी अहमियत समझी। अब खुद को परखा तो पाया कि वह भी दो सीगों वाली गाय बन चुकी थी।

बैल उसके बढ़ते सींग देखकर वैसे ही परेशान था। अब वह अपनी गलती पर पछताने लगा। समझ गया कोई भी गाय बिना सींगो वाली नहीं होती और अब जब गाय अपने सींग दिखाने लगी तो बेचारा क्या करता? समझौता कर लिया।

गाय अब बहुत खुश थी। यह बात वह औरों को भी समझाने लगी। हां, वह गाय मैं ही थी। □